बस्तर दशहरा

➢ परिदृश्य :–

- बस्तर का दशहरा छत्तीसगढ़ के वनवासी अंचल का सर्वश्रेष्ठ पर्व है। बस्तर की आराध्य देवी ''माँ दंतेश्वरी'' एवं ''माता मावली'' की पूजा अराधना के साथ बस्तर वासियों द्वारा इस अनोखे एवं भक्तिमय पर्व, ''बस्तर दशहरा'' को श्रावण अमावस्या (हरेली) से लेकर अश्विन शुक्ल त्रयोदशी तक **(75 दिन)** मनाया जाता है।
- रियासतकाल में बस्तर के काकतीय वंश के चौथे राजा पुरुषोत्तम देव (1405 ई.) ने अपने शासनकाल में श्री जगन्नाथपुरी (उड़ीसा) की पदयात्रा की थी। मंदिर में स्वर्ण मुद्राएं एवं स्वर्ण आभूषण आदि सामग्री भेंट में की थी। राजकीय भक्ति से प्रसन्न होकर यहां के पुजारी ने राजा को ''**स्थपति**'' की उपाधि से विभूषित किया था तथा 18 पहिए का रथ भेंट किया था।
- जब काकतीय नरेश पुरी धाम से बस्तर लौटे तब उन्होंने बस्तर में धूम–धाम से दशहरा उत्सव मनाने की परंपरा का शुभारंभ किया और तभी से ''बस्तर में दशहरा'' तथा आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को ''गोंचा पर्व'' के रूप में रथयात्रा प्रारंभ हुई।
- रियासत काल के भूतपूर्व छिंदकनागवंशी शासकों से लेकर काकतीय नरेशों एवं इनके राजपरिवार की ईष्टदेवी ''माता दंतेश्वरी'' के प्रति सामूहिक अभिव्यक्ति का पर्व है बस्तर का दशहरा।

➢ दशहरा समिति :–

- बस्तर अंचल में दशहरा पर्व के संचालन के लिए दशहरा समिति का गठन किया गया है, जिसमें प्रतिवर्ष अध्यक्ष का चुनाव किया जाता है। इस उत्सव को मनाने के लिए धनराशि राज्य शासन भी प्रदान करती है। बस्तर का दशहरा निम्नलिखित विभिन्न रस्मों के साथ बड़े धूमधाम से हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है :–

1. पाट जात्रा	2. डेरी गड़ाई	3. काछिन गादी	4. रैला पूजा
5. कलश स्थापना	6. जोगी बिठाई	7. रथ परिक्रमा	8. निशा जात्रा
9. जोगी उठाई	10. मावली परघाव	11. भीतरी रैनी	12. बाहर रैनी
13. मुरिया दरबार	14. काछिन जात्रा एवं ओहाड़ी		

1. पाट जात्रा :–

- इस पर्व में पहला विधान पाट जात्रा होता है जिसमें हरेली अमावस्या के दिन रथ निर्माण हेतु बिलोरी गाँव के निवासी माचकोट के जंगल से लाए गए साल वृक्ष की लकड़ी के लट्ठे (ठुरलू खोटला) का विधि पूर्वक पूजा अर्चना दंतेश्वरी माता के सिंहद्वार के समक्ष की जाती है। उसके बाद रथ निर्माण का कार्य प्रारंभ हो जाता है।

2. डेरी गड़ाई :–

- पाट जात्रा के बाद भादो शुक्ल द्वादश या तेरस के दिन दंतेश्वरी मंदिर के समीप सिरहासार भवन में बिलोरी के ग्रामवासियों के द्वारा लकड़ी की दो डेरियों की विधि पूर्वक पूजा कर इसे स्थापित किया जाता है। इस रस्म को डेरी–गड़ाई कहा जाता है। रथ निर्माणकर्ता संवरा जाति के लोग इसमें निवास करते हैं।

3. काछिन गादी :–

- काछिन गादी का अर्थ काछिन देवी को गद्दी देना होता है। यह गद्दी कांटों से सुसज्जित होता है। रणदेवी (काछिन देवी) बस्तर के मिरगानों की कुल देवी है। यह पशुधन एवं अन्नधन की रक्षा करती है।
- अश्विन मास की अमावस्या के दिन पथरागुड़ा में स्थित काछिन देवी के मंदिर में काछिन देवी की पूजा अर्चना कर उनसे दशहरा उत्सव मनाने की अनुमति ली जाती है।
- प्रत्येक साल काछिन देवी एक नाबालिक कुंवारी कन्या (मिरगान जाति) पर सवार होती है, काछिन देवी जिस कुवारी कन्या पर सवार होती है उसे कांटेदार झूले पर लिटाकर झुलाया जाता है तथा पूजा–अर्चना कर उससे दशहरा उत्सव मनाने की स्वीकृति ली जाती है। माता की स्वीकृति से बस्तर का दशहरा पर्व बड़ी धूमधाम से प्रारंभ हो जाता है।

4. रैला पूजा :–

- बस्तर के काकतीय नरेश अन्नमदेव की बहिन, रैला देवी का गोदावरी नदी में जल समाधि लेने के बाद प्रतिवर्ष मिरगान लोगों के द्वारा उनकी श्राद्ध पूजा की जाती है। यही श्राद्ध कार्य दशहरा उत्सव में रैला पूजा के नाम से प्रचलित है।

5. कलश स्थापना :–

- अश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवरात्रि प्रारंभ हो जाता है। इस अवसर पर माता दंतेश्वरी, मावली एवं कंकालिन मंदिर अंचल में हजारों श्रद्धालुओं द्वारा ज्योति कलश की स्थापना की जाती है।

6. जोगी–बिठाई :–

- जनश्रुतियों के अनुसार प्राचीन समय में एक बार हल्बा जनजाति का व्यक्ति दशहरा निर्विघ्न होने की कामना हेतु अपनी इच्छा से योग साधना में बैठ गया। तब से नवरात्रि के प्रथम दिन दंतेश्वरी मंदिर के निकट सिरहासार भवन में हल्बा जोगी लगातार 9 दिनों तक अपनी योग साधना में लीन रहता है। इस बीच वह केवल फलाहार एवं दुग्धाहार का सेवन करता है। जोगी बिठाई से पूर्व एक बकरा एवं 7 मांगुर मछली की बलि दी जाती है, किन्तु वर्तमान में केवल मांगुर मछली की बलि दी जाती है।

7. रथ परिक्रमा :–

- अश्विन शुक्ल द्वितीया से 6 दिनों तक अर्थात अश्विन शुक्ल सप्तमी तक फूलों से सुसज्जित 4 पहिए वाले फूलरथ को एक निश्चित मार्ग पर खींचा जाता है मंदिर का पुजारी सम्मान के साथ देवी दंतेश्वरी के छत्र को रथ पर आरूढ़ करता है। उसके पश्चात् मां की पूजा–अर्चना तथा उनको सलामी दी जाती है।
- प्राचीन समय में इस रथ पर राजा बैठते थे तथा उनके सिर पर फूलों की पगड़ी बैंधी होती थी इसलिए इस रथ को फूलरथ कहा जाता है।
- फूलरथ की रस्सियों को प्रतिदिन अलग–अलग गांव के आदिवासी श्रद्धापूर्वक खींचते है इस दौरान उनमें अलग ही उत्साह देखने को मिलता है। नृत्य–गान, बैण्ड–बाजे तथा मोहरी की गूंज चारों तरफ गुंजती रहती है। शाम होने के बाद प्रतिदिन रथ सिंहद्वार के सामने रूकते हैं। उसके पश्चात् मैया के छत्र को मंदिर के भीतर ले जाया जाता है। फूलरथ की रस्सी को सियारी से तैयार किया जाता है।

8. निशा जात्रा :–

- रथ परिक्रमा के समापन के पश्चात् दुर्गाष्टमी के दिन निशाजात्रा रस्म किया जाता है। यह बलि उत्सव है, मावली माता व भैरवदेव को बलि चढ़ाई जाती है। इस रात 12 बजे से पूर्व राजा की उपस्थिति में भक्तों की शोभायात्रा इतवारी बाजार के पूजा मण्डप तक जाती है। निशाजात्रा को गांव के प्रतिष्ठित लोगों के घर प्रसाद के रूप में पहुंचाया जाता है।

9. जोगी उठाई :–

- अश्विन शुक्ल नवमी के शाम सिरहासार भवन में योग साधना में बैठे हल्बा जोगी के व्रत के पूर्ण होने पर उसे उठाया जाता है तथा पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाता है।

10. मावली परघाव :–

- नवमी की रात को माता मावली (दंतेश्वरी माता की बड़ी बहिन) की डोली को दंतेवाड़ा से लाया जाता है। मावली देवी को दंतेश्वरी का ही रूप मानते हैं, नये कपड़े में चंदन का लेप देकर माँ की मूर्ति बनाई जाती है और उसे पुष्पाच्छादित किया जाता है, इस प्रकार मावली माता निमंत्रण पाकर दशहरा पर्व में सम्मिलित होने जगदलपुर पहुंचती है। इस अवसर पर पुरुष नर्तक सिर पर गौर सिंह से बनी आकर्षक पगड़ी पहनकर ढोल बजाते हुए गौर नृत्य करते है। इस नृत्य में महिलाएँ भी भाग लेती है।

11. भीतर रैनी :–

- विजयादशमी एवं एकादशी के दिन 8 पहियों वाले विशाल रथ को निर्धारित मार्ग पर 2 बार खींचा जाता है तथा रथ के समक्ष एक भैंस की बलि दी जाती थी, लेकिन अब यह परंपरा खत्म हो चुकी है (भैंस को महिषासुर का प्रतिक माना जाता है)। पूजा–अर्चना के बाद प्रथा के अनुसार आदिवासी इस रथ को चुराकर दंतेश्वरी मंदिर से 2 कि.मी. दूर स्थित ''कुम्हड़ाकोट'' नामक स्थान पर ले जाते है। इस दिन छत्तीसगढ़ पुलिस द्वारा माता को सलामी दी जाती है।

12. बाहर रैनी :–

- अश्विन शुक्ल एकादशी के दिन फसल कटाई के बाद राजपरिवार के लोग नए अन्न का भोग अपनी ईष्टदेवी को अर्पित करते है। किलेपाल क्षेत्र के माड़िया जनजाति के द्वारा बाहर रैनी का झूलेदार रथ कुम्हड़ाकोट से चल कर थाने की ओर से सदर रोड होते हुए सदर प्राथमिक शाला के निकट चौराहें से गुजरते हुए सिंह द्वार तक पहुंचता है। भतरा जाति के लोग धनुर्धारी के रूप में माता के रथ की रास्ते भर रक्षा करते हैं।

13. मुरिया दरबार :–

- अश्विन शुक्ल द्वादश के दिन समस्याओं के समाधान के लिए सिरहासार भवन में लगभग 5 बजे मुरिया दरबार का आयोजन किया जाता है। प्राचीन समय में इस दरबार में प्रत्येक ग्राम का मुखिया अपने–अपने क्षेत्रों की समस्याओं को राजा के समक्ष रखता था तथा राजा उसका निराकरण करते थे। किन्तु वर्तमान में राजा के स्थान पर जनप्रतिनिधि एवं विभिन्न विभागों के अधिकारियों के बीच जरूरी मुद्दों पर विचारों का आदान–प्रदान होता है।

14. काछिन जात्रा एवं ओहाड़ी :–

- अश्विन शुक्ल तेरस के दिन काछिन मण्डप में जात्रा पूजन कर देवी–देवताओं के छत्र एवं डोली को पुजारी के द्वारा गंगामुण्डा ले जाया जाता है तथा दशहरे में आमंत्रित सभी देवी–देवताओं को विदा किया जाता है। उसके बाद ओहाड़ी रस्म में दंतेवाड़ा से आई माता मावली को सम्मानपूर्वक विदा किया जाता है।